ओम् शान्ति 29-5-10 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश (गुल्जार दादी)

आज विशेष आप सबका समाचार और यादप्यार लेकर बापदादा के पास वतन में पहुंची तो आज क्या देखा! बापदादा सामने खड़े थे लेकिन बाबा के नयनों और भ्रकुटी से भिन्न-भिन्न शक्तियों की किरणें निकल विश्व के चारों तरफ लाइट हाउस समान फैल रही हैं। मैं भी बाप समान अनुभव करते हुए पास में पहुंच गई। कुछ समय तो मैं भी उसी शक्ति की अनुभूति में खो गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची क्या देख रही हो? बापदादा को अपने दु:खी अन्जान बच्चों से कितना प्यार है कि कुछ न कुछ शक्ति द्वारा आत्माओं का कल्याण हो जाए। आप बच्चों का तो स्वमान ही है विश्व कल्याणकारी।

उसके बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आजकल तो चारों ओर साइलेन्स की शक्ति बढ़ाने की भट्ठियां चल रही हैं और सेवा के प्रोग्रामस द्वारा सर्व को सन्देश देने की सेवा भी ज़ोरशोर से चल रही है। साथ में आपके दिये हुए होमवर्क पर भी अटेन्शन दे रहे हैं। याद और सेवा दोनों अच्छी उमंग-उत्साह से चल रही हैं। बापदादा बच्चों का उत्साह उमंग देख मुस्कराये और बोले बाप बच्चों का उमंग-उत्साह देख खुश होते ''वाह मेरे लाडले नूरे जहान बच्चे वाह! सदा फरिश्ते बन उड़ते चलो।'' बापदादा तो और ही बच्चों को सदा तीव्र पुरुषार्थ की गति से उड़ाने चाहते हैं। बापदादा की यही आश है कि हर बच्चा राजा बच्चा फरिश्ता बन विश्व के आगे प्रत्यक्ष हो। हर कल्प मेरे बच्चे ही तो विजयी पाण्डव और शिव शक्ति रूप में प्रसिद्ध हैं ना! विजय तो बच्चों के गले का हार है। हर बच्चे से बाप का अति स्नेह है क्योंकि बाप जानते हैं यह बच्चे ही तो कोटों में कोई तो क्या कोई में कोई हैं। बच्चे ही तो बाप के साथी हैं, अकेले बाप कुछ नहीं करता। आदि से स्थापना से लेकर बच्चों ने साथ दिया है और देते रहते हैं। हर कदम हर कार्य में साथी हैं, साथ हैं, साथ चलेंगे। उसके बाद बाबा को अपने टूवर का समाचार सुनाया कि बाबा जैसे आपने सुनाया आप कल्प वृक्ष के फाउण्डेशन हो, चाहे किसी भी धर्म वाले हैं लेकिन आपके वृक्ष की शाखायें हैं, आपके हैं क्योंकि आप पूर्वज और पूज्य हो। ऐसे ही इस तरफ के टूवर में (मिडिल इस्ट - दुबई, बहरीन, कुवेत आदि तरफ) अनुभव हुआ, चाहे अरब के बच्चे, अरबी, मुस्लिम वा हिन्दू थे, लेकिन इतना प्यार से शिवबाबा को याद कर मेडीटेशन में बहुत रुचि रखते, जो देखने जैसा थे।

बाबा बोले बच्ची, बाप तो कहते ही हैं कि अब समय भी अपना रूप दिखा रहा है। बाप तो सदा बच्चों को याद दिला रहा है कि रहे हुए बच्चों को सन्देश दे मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा तो दिलाओ, अपना अधिकार तो दिलाओ। नहीं तो आपके प्रति उल्हना रह जायेगा। कर रहे हो लेकिन अब दोनों में तीव्रता लानी है। बापदादा देख रहे हैं कर रहे हो, करते रहेंगे लेकिन अब और स्पीड अर्थात् तीव्रता को बढ़ाओ क्योंकि अचानक ही समय आना है। बापदादा खुश भी है लेकिन वर्से से रहे हुए बच्चों प्रति रहम भी आता है। तो हे रहमदिल बच्चे, पूर्वज पूज्य बच्चे अपने कार्य को और तीव्र करो। ऐसे कहते बापदादा ऐसे साइलेन्स में चले गये जैसे वतन में होते भी नहीं हैं और बाद में बोले, बच्चे चारों ओर डर का वातावरण है, हे निर्भय रहमदिल बच्चे अब रहम करो। डर से छुड़ाओ, वर्सा मुक्ति जीवनमुक्ति का दिलाओ। ऐसे कहते बाबा का चेहरा बिल्कुल दाता रूप का था और हमें भी प्रेरणा दिला रहे थे।

फिर मैंने बाबा को दादी रतनमोहिनी की खास याद दी, तो बापदादा बहुत दिल से उनको दुलार देते बोले, बच्ची हर कार्य में सहयोगी, मिलनसार है। सेवा की आलराउन्ड रत्न है। बच्ची के दिल की उमंग, दिल का प्यार बापदादा के पास पहुंचता है। विशेष आदि रत्न है। बापदादा की नज़रों में समाई हुई बच्ची है। विजयी है, विजयी रहेगी।

उसके बाद बाबा बोले, देश विदेश के हर बच्चे को बाप अपने नयनों में समाते हुए दिल का दुलार, दिल का प्यार दे रहे हैं। ऐसे सब बच्चों को यादप्यार देते मिलन मनाते हमें भी साकार वतन में भेज दिया। अच्छा। ओम् शान्ति।